

— अयि 1) eintreten unter oder in, eingehen; theilhaftig werden, er-leiden; mit dem acc.: वर्षेव वाञ्छि शिश्रुमतीरपीत्यं RV. 2, 43, 2. न यो मातरावप्येति धातवे 10, 115, 1. प्रियमप्येति पाथः 1, 162, 2. 2, 3, 9. 7, 47, 3. अग्नेः प्रियं पाथो ऽपीतम् VS. 2, 17. अग्नेः प्रियं पाथो ऽपीहि 8, 50. AV. 2, 34, 2. प्रुचयः प्रुचिमापि पत्ति लोकम् 4, 34, 2. स्वी योनिमपीतन 10, 5, 23. देवाँ अ-प्येति 10, 6. AIT. Br. 2, 10, 41. BṚH. ĀR. UP. 4, 1, 2. TAITT. UP. 2, 8. तेन धीरा अपिपत्ति ब्रह्मविद्: स्वर्गं लोकम् BṚH. ĀR. UP. 4, 4, 8. ए एतद्विडुर-मृतास्ते भवत्यथेतेर डःखमेवापियति BṚH. ĀR. UP. 4, 4, 14 (= ÇVETĀÇV. UP. 3, 10). त्रामृत्युं ते पुनेरवापियति MUND. UP. 1, 2, 7. — 2) in Ver-bindung treten, sich vereinigen; sich ergiessen (von Flüssen); sich in Et-was auflösen; mit dem acc.: अस्या वामन्यामप्येति RV. 3, 33, 2. पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि पत्ति सन्नैतसः VS. 34, 11. याः काशेष्टयस्ताः सर्वा अग्निष्टोम-मपियति AIT. Br. 3, 40. अन्तमैव तदात्मानमप्येति ÇAT. Br. 6, 6, 2, 13. यदा वै पुरुषः स्वपिति प्राणं तर्हि वागप्येति 10, 3, 2, 6. 8. 4, 5, 1. 12, 3, 5, 11. यत्रास्य पुरुषस्य मृतस्याग्रं वागप्येति BṚH. ĀR. UP. 3, 2, 13. स्वमपीतो भवति तस्मादेनं स्वपितोत्याचते (etym. Spiel). KĪHĀND. UP. 4, 4, 14. ÇAT. Br. 10, 5, 2, 14. अग्नेन्द्र (अन्नम्) अपियत्यततः TAITT. UP. 2, 2. — 3) hingehen in die andere Welt, sterben: मा त्वा तप्यप्रय अत्मापियत्तम् RV. 1, 162, 20. — Vgl. अपीति, अप्यय.

— अमि 1) herankommen, sich einstellen: अपान्येदत्यभ्यन्येदेति RV. 1, 123, 7. 8, 2, 40. प्रेक्ष्मोहि 1, 80, 3. वनी वृष्टता अमि विद्रिपान् 10, 28, 8. AV. 1, 23, 4. 13, 1, 10. शार्दूलो ऽभिमूलो ऽभ्येति N. 12, 22. SĀV. 6, 4. अस्माननुमितो ऽभ्येति BHATT. 7, 84. zugehen auf; aufsuchen; los-gehen auf; mit dem acc.: वर्षेव पत्नीरभ्येति रोक्वत् RV. 1, 140, 6. कृ-त्ति शत्रुमभित्यं 9, 35, 4. 96, 22. 101, 16. अमिं या वामनोति 10, 63, 16. 83, 3. AV. 5, 1, 5. 4, 2. 7, 46, 3. 10, 7, 4. 6. तामौह्यौश्रमभिः पश्चात्प्राधो विभ-जमाना अभीयुः sie machten sich daran dieselbe mit rindsledernen Riemen von hinten nach vorn (messend) zu vertheilen ÇAT. Br. 1, 2, 2, 2. 6, 6, 2, 1. अभीयाय — विक्रम्य प्रधसो हरिम् R. 5, 41, 33. अस्तमभ्येति सविता die Sonne neigt sich zum Untergange MBH. 1, 1797. सकाशम् oder समी-पम् in Jndes Nähe, zu Jmd kommen PAÑKĀT. 46, 4. 200. 2. IV, 21. st. क-न्यकापार्श्वे 46, 10 ist vielleicht ऽपार्श्वम् zu lesen. med.: ते ऽसुरा वञ्चमुद्य-त्यं देवान्-गार्पतं गिगन auf die Götter los TS. 6, 4, 6, 1. — 2) entlang gehen, nachgehen: अग्रं पूर्वाभ्येति पश्चात् RV. 1, 124, 9. 8, 89, 1. 10, 3, 3. 117, 8. AV. 8, 9, 9. पुनं कानाशो अमिं यन्तु वाहिः RV. 4, 37, 8. ÇAT. Br. 12, 4, 4, 2, 3. त्वष्टा नत्त्रमभ्येति चित्राम् TAITT. Br. 3, 1, 4, 12. 13. नासा-भ्येति तिलप्रसूनपदवीम् geht den Wey entlang, d. i. gleicht Gīt. 10, 14. अग्नेनं पृष्ठतो ऽभ्येति R. 1, 19, 23. — 3) hereintreten, eingehen in, sich vereinigen mit, übergehen zu: वनम् — अग्यैः केन केतुना BHATT. 3, 67. अवाङ्गरकमभ्येति M. 8, 75. ब्रह्म परमभ्येति वायुभूतः खमूर्तिमान् 2, 82, 6. 79, 12, 125. पञ्च भूतानि 22, 18. मारुतं पुरुहूतं च गुहं पावकमेव च । च-तुरा व्रतितो ऽभ्येति ब्राह्मं तेजा ऽवकीर्णिनः 11, 121. — 4) treffen, errei-chen: दिव्या आपो अमिं यदेनमायन् RV. 7, 103, 2. स तेषां (व्यसनानां) पा-रमभ्येति PAÑKĀT. II, 6. ते नपनविषयं यावदभ्येति भानुः MEGH. 33. med.: अग्नेनं वञ्चं अयमः सुकृष्मष्टिरायत् RV. 1, 80, 12. AV. 4, 24, 6. — 5) zu Jmd (acc.) gelangen, zu Theil werden: नाविद्विदिपुमभ्येति संयत् BHATT. 7, 99. — 6) zu Etwas (acc.) gelangen, erlangen, gerathen in: देहान्यवे-ष्टमभ्येति क्विमेमां मानुषीं तनुम् MBH. 14, 562. कार्यं संसिद्धिमभ्येति PAÑ-

KAṬ. I, 140. जीवन्न यदि ते ऽभ्येति प्रकृषां मृगसतमः R. 3, 49, 28. मोक्षमभ्ये-ति चेतः Dhūrtas. 93, 12. पीडामभ्येतुम् MBH. 3, 8575. व्यसनं शोकमेव च PAÑKĀT. I, 132. — Vgl. अभीति fig., अ-भ्यय. — intens. anfehen: अमि त्वा देव सवितरीशानं वार्षाणाम् । सदावन्नागमीमहे RV. 1, 24, 3.

— समभि 1) herankommen, nahen, sich einstellen: सं त्वा धस्मन्वदभ्येतु पाथः सं रूपिः RV. 6, 15, 12. आवां कृतुं समभ्येति भरतः R. 2, 97, 18. यो ऽना-हृतः समभ्येति PAÑKĀT. I, 98. 36, 17. 81, 23. 104, 20. अकृते ऽप्युद्यमे पुंसा-मन्यन्नमकृतं फलम् । शुभाशुभं समभ्येति विधिना संनियोजितम् ॥ II, 78. — 2) folgen: सतीव योषितप्रकृतिः नुनिश्चला पुंसासमभ्येति भवातरेष्वपि ÇICUP. 1, 72.

— अय 1) weggehen, sich entfernen; hingehen zu (mit dem acc.): अय-दधुर्कुविषव सिन्दुम् RV. 5, 37, 2. अत्रैव-चम् 49, 5. अयं तानेना नमसा तुर-इयाम् 7, 86, 4. गौरा तप्यन्नेत्यवोरणाम् 8, 4, 3. कन्याश्चरवापती (Padap.: अयऽपती) 80, 1. AV. 1, 11, 4. abgehen: सुहृवीह त्रारुपुणा RV. 5, 78, 8.

— 2) herabkommen auf, sich stürzen auf: व्यश्चन सु-वर्षं अयं पत्ति नृभा मर्तमनुयतं वधुत्सैः RV. 5, 41, 13. अवायतो पत्तिपाः AV. 11, 12, 8. अय्यतीः समवदत्त दिव ओषधयस्परिः VS. 12, 91 (KĀṆVA). — 3) schauen auf, be-trachten: अय्यक्तमिव स्नातः प्रुचिरप्रुचिमिव प्रबुद्ध इव सुतम् । बद्धमिव स्वैरगतर्जनमिह सुखसङ्गिनमवैमि ॥ ÇĀK. 108. अवेनाशं दशास्यस्य निर्वृ-तमिव BHATT. 7, 33. इत्यवैमि so meine ich VIKR. 8, 18. begreifen, verste-hen, kennen, kennen lernen, erfahren: अवैमि चारुम् MBH. 3, 2329. एत-त्सर्वं मम नावैति चेतः 235. न चावैषि प्रयोजनम् 12694. यदि ववैषि ते हितम् R. 4, 14, 24. अवैमि ते तस्या सोदर्यन्नेकम् ÇĀK. 53, 10. KUMĀRAS. 3, 13. BHATT. 5, 87. अवैहि तपसो वलं मम PRAB. 24, 10. KATHĀS. 17, 26. भवा-नपीदम् — अवैति — यत् weiss, dass RAGH. 2, 56. Etwas als Etwas erkennen; wissen, erfahren, dass; mit dem acc. des obj. und praed.: अत्रियो मां मध्यमं पुत्रं दनुं नाम्ना च दानवम् । इन्द्रकोपादिदं त्रयं प्रातवत्समवेहि च ॥ R. 3, 73, 24. प्रातमुद्योगकालं च नावैषि 4, 32, 15. 3, 4, 22. ÇĀK. 79. 163. RAGH. 1, 71. 2, 35. 3, 63. KATHĀS. 13, 110. 13, 112. das praed. im nom. mit folg.

इति so: मृगयाः परिभवे व्याघ्र्यामित्यवेहि तया कृतम् RAGH. 12, 37. — partic. अत्रेत 1) abgelaufen: एको मासः संवत्सरस्यानवेतः स्यात् TS. 2, 6, 2, 5. — 2) erlangt —, erhalten habend: तद्वेतः P. 5, 1, 134. = तत्प्रातः Sch. गार्गिकानवेतः ebend. mit Etwas (einem Suffix) verbunden P. 6, 4, 93. VĀRTI. — Vgl. अवाय. — intens. abbitten, versöhnen: अयं ते हेऽम्बो वरुणा नमोभिर्वं यज्ञेभिरीमहे RV. 1, 24, 14.

— अन्वव 1) nachgehen, zugehen auf; mit dem acc. ÇAT. Br. 3, 3, 4. 15. तथैषो नियानं नन्ववायन् 5, 2, 15. 6, 3, 2, 5. महाहिमिव वै क्रुदाद-लीयानन्ववेत्यानुत् स्वादास्यानात् 11, 5, 5, 8. 9, 1, 2, 33. 2, 7. — 2) anheim-fallen, verfallen: नेत्याप्मानं निश्चितमन्ववायाम ÇAT. Br. 7, 2, 2, 13. नेत्या-प्मानं मृत्युमन्ववायानि 14, 4, 2, 11 (= BṚH. ĀR. UP. 1, 3, 10). पितृलोके वा एते ऽन्ववयति 12, 8, 2, 18. — Vgl. अन्ववाय, अन्ववायान.

— अन्वय 1) hinabgehen, hinabsteigen, bes. in das Bad: अन्वयमभ्य-वैति AIT. Br. 1, 3. अयः ÇAT. Br. 3, 2, 2, 27. 8, 5, 10. 2, 5, 2, 45. 5, 3, 2, 4. 6. KĀṬI. ÇR. 5, 5, 30. 6, 10, 3. — 2) Einsehen haben, sich herablassen: ततो ऽभ्यवेप्यति ततो रातमनसं आलम्भाय भविष्यति ÇAT. Br. 3, 7, 2, 4. 4. 2. 2, 16. 3, 4, 14. — 3) wahrnehmen: तदर्थयो यज्ञवास्त्वन्ववायन् ते ऽपश्य-न्पुराडाशम् TS. 2, 6, 2, 2. — Vgl. अन्ववायान.

— समन्वय 1) zusammengehen, sich ansammeln: पशोर्हि वा आलम्भ-